गाँधीवादी आइने में प्रेमचन्द

डॉ0 रेखा पतसारिया,

एसोसियट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,

हिन्दी विभाग,

आगरा कॉलेज, आगरा

शोधसार

प्रेमचन्द का साहित्य में उदय निम्न वर्ग के मसीहा के रूप में हुआ। जिस समय प्रेमचन्द ने लिखना शुरू किया, वो स्वतन्त्रता संग्राम का समय था। गाँधी इस संग्राम के मसीहा बनकर उभर रहे थे। अतः गाँधी की विचारधारा और कार्यशैली दोनों का प्रभाव प्रेमचन्द ने ग्रहण किया और उसे अपने साहित्य में उतारा। प्रेमचन्द को उनके सुधारवादी चिन्तन शैली के कारण साहित्यकार एवं आलोचक उन्हें गाँधीवादी कहते है, किन्तु यह भी सत्य है कि गाँधीवाद से शुरू हुआ चिन्तन समाजवादी चेतना की ओर बढ़ गया।

की वर्ड – गाँधीवाद, सुधारवादी चिन्तन, समाजवादी चेतना

प्रेमचन्द का सम्पूर्ण साहित्य उनके समकालीन समाज का आइना है। तत्कालीन समाज का रहन–सहन, खान–पान, आर्थिक, सामाजिक–सांस्कृतिक स्थितियाँ, यहाँ तक कि तत्कालीन समाज क्या सोच रहा था, इस पर भी प्रेमचन्द की पकड़ गहरी और मजबूत है, साथ ही साहित्य में उसे प्रामाणिक रूप से अभिव्यक्त करने की अद्‌भुत सामर्थ्य है। 'समय–समाज की राजनैतिक समझ में भी प्रेमचन्द का कोई मुकाबला नही था।'

जब प्रेम चन्द ने हिन्दी में लिखना आरम्भ किया तब गाँधी जी भारतीय राजनैतिक मंच पर अपने आप को स्थापित कर चुके थे। गाँधीजी स्वराज्य का सपना देखते थे, जहाँ अमीर–गरीब सब बराबर हों, दुख न हों, कष्ट न हों, साम्प्रदायिकता न हो, कोई ऊँच–नीच और छूआछूत न हो। सबका अधिकार समान हो। यही सपना प्रेमचन्द का भी था जो उन्होने अपने साहित्य के माध्यम से प्रकट किया। दोनों का लक्ष्य मानवता की रक्षा ही था। इसलिए प्रेमचन्द का गाँधीवाद विचारधारा से प्रभावित होना स्वाभाविक ही था। साहित्यकार सजग प्रहरी के रूप में अपनी कृतियों के माध्यम से अपने युग की विभिन्न समस्याओं और नई–नई विचार धाराओं का सूक्ष्मता से विचार करता है और

उनके परिणामों तक पर ध्यान रखता हुआ उन्हें अपने साहित्य में स्थान देता है। प्रेमचन्द स्वयं इस विषय में कहते हैं कि ''स्रष्टा को जनता की अदालत में अपनी हर एक कृति के लिए जवाब देना पड़ेगा।''[1]

प्रेम चन्द के युग में गाँधीवादी विचार धारा ही प्रमुख थी इसलिए गाँधीवादी चिन्तन प्रेमचन्द के साहित्य में स्पष्ट परिलक्षित होता है। प्रेम चन्द पर गाँधी का हिन्दी प्रेम सबसे पहले प्रभाव डालता है।

अप्रैल 1931 मे अपने लेख 'राष्ट्रीय कार्यो में गुलामी' के अन्तर्गत भी प्रेमचन्द ने गाँधी जी के हिन्दी भाषा–प्रेम को प्रकट करते हुये उनकी बात पर लोगों द्वारा ध्यान न देने पर चिन्ता व्यक्त की थी – ''हमें यह देख कर महान दुख होता है कि हमारे राष्ट्रीय कार्यो में अब भी अंग्रेजी का वही प्राधान्य है और महात्मा जी ने कांग्रेसी कार्यकर्ताओं को हिन्दी के विषय में जो उपदेश दिया था, उस पर कान नही दिया गया।''[2]

गाँधी जी ने किसी नवीन विचाराधारा या जीवन–दर्शन को प्रतिपादित नही किया। उन्होने तो केवल प्राचीन आचारपरक आध्यात्मिक जीवन–दृष्टि तथा सांस्कृतिक परम्पराओं की युगानुकूल नई परिभाषा या व्याख्या की है। इस संदर्भ में गाँधी जी के सहयोगी डॉ0 पटाभि सीता रमैया ने लिखा है – ''गाँधीवाद वस्तुतः भारत की उस आचार परक आध्यात्मिक जीवन–दृष्टि तथा सांस्कृतिक परम्पराओं का आधुनिक परिस्थितियों के अनुकूल परिवर्द्धित एवं संशोधित संस्करण है, जो शताब्दियों से सत्य, अहिंसा, सेवा, प्रेम, त्याग, सहिष्णुता, अस्तेय, अपरिग्रह, आत्मसंयम आदि नैतिक मूल्यों को भौतिक जीवन मानों की उपेक्षा अधिक काम्य और वरेण्य मानती आई है।''[3]

प्रेमचन्द लेखकों के उस वर्ग से सम्बन्धित थे, जो नैतिक उपदेशों के एक विशेष स्वर को स्वीकार करता है। ''उनके यथार्थवाद के मूल में किसानों की आत्मा को नष्ट करने वाली यंत्रणा के दर्शन होते हैं। इस कारण उनकी कला में गंभीर मानवीय विशेषता है और प्रेम का संदेश है।''[4]

यही कारण था कि जब उन्होने लिखना प्रारम्भ किया तो उनकी कृतियों में समाज सुधार के स्वर अत्यन्त तीव्र थे। वह सुधार के लिये कटिबद्ध थे। 1905, 1920 – 22 और 1930 – 32 के राजनीतिक आन्दोलनों ने उनके मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डाला। आरम्भ का सुधारवादी आन्दोलन, उदारतावाद से आरम्भ होकर असहयोग में समाप्त होने वाला राजनैतिक संघर्ष और सविनय अवज्ञा, आन्दोलन ने उनके विचारों को नया मानवतावादी स्वर दिया। ये सब गाँधी जी के प्रभाव को ही दर्शाता है।

वर्ष 1935 में हिन्दी साहित्य परिषद की बैठक में गाँधी जी से उनकी पहली भेंट हुई थी। लौटकर आने पर उन्होने गाँधी जी के प्रभाव को अपनी पत्नी शिवरानी को बताया था। शिवरानी के यह कहने पर कि आप महात्मा जी के चेले हो गये, उन्होने कहा – ''चेला बनने का मतलब किसी की पूजा करना नहीं, उसके गुणों को अपनाना होता है। मैने उन्हें अपनाकर ही 'प्रेमाश्रम' लिखा, जो वर्ष 1922 में छपा है।'' आगे प्रेमचन्द ने कहा – ''वह भी मजदूर किसानों की भलाई के लिये आन्दोलन चला रहे हैं और मैं भी कलम से यही कुछ कर रहा हूँ।'' (प्रेमचन्द घर में)

गाँधी जी के चिन्तन के मुख्य तीन सिद्धान्त हैं– सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह। इनके अतिरिक्त व्यवहारिक पक्ष मे अठारह तत्व है, जिनमें अस्पृश्यता निवारण, मद्यपान निषेघ, स्वदेश प्रेम, साम्प्रादायिक एकता, गाँधी प्रयोग, आर्थिक समानता, स्त्री के प्रति आदर आदि प्रमुख हैं। इन्हीं सिद्धान्तों एवं तत्वों को आधार बनाकर प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में इन्हीं समस्याओं को उभारा है और संभावित समाधान भी प्रस्तुत किया है। गाँधीजी का प्रभाव प्रेमचन्द पर इस तथ्य से और प्रमाणित हो जाता है कि उन्होने गाँधी जी के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर अपनी बीस वर्ष की सरकारी नौकरी को ठोकर मार दी थी। इस घटना के बारे में प्रेमचन्द ने स्वयं लिखा है – यह सन् 1920 की बात है। असहयोग आन्दोलन जोरों पर था। जलियाँवाला बाग का हत्याकांड हो चुका था। उन्हीं दिनों महात्मा गाँधी ने गोरखपुर का दौरा किया। गाजी मियाँ के मैदान में अच्छा प्लेटफार्म तैयार किया गया। दो लाख से कम का जमाव न था। क्या शहर, क्या देहात, श्रद्धालु जनता दौड़ी चली आती थी। ऐसा समारोह मैने अपने जीवन में कभी न देखा था। महात्मा गाँधी के

दर्शनों का प्रताप था कि मुझ जैसा मरा हुआ आदमी भी चेत उठा। उसके दो चार दिन बाद ही मैने अपनी बीस साल की नौकरी से इस्तीफा दे दिया।

'सत्य' गाँधी जी की विचारधारा का मूल तत्व है। प्रेमचन्द के कथा साहित्य में अनेक पात्र सत्य–आचरण का पालन करते हुए दिखाए गए हैं। वे सत्य के पालन के लिए अनेक कष्टों को सहन करते हैं। लेखक ने अन्ततः उन पात्रों की विजय दिखाकर गाँधी जी के सत्य पालन में विश्वास व आस्था व्यक्त की है। 'कायाकल्प' का चक्रधर, 'कर्मभूमि' का अमरकान्त 'रंगभूमि' का सूरदास आदि ऐसे ही पात्र है। अमरकांत आदि से अन्त तक सत्य का निर्वाह करता हुआ 'कर्मभूमि' रूपी संसार में समाज कल्याण के लिये कार्य करता है। इसी प्रकार मन्दिर में प्रवेशाधिकार के लिए जिस सामूहिक आन्दोलन का चित्रण किया गया है, वह भी पूर्णतः गाँधी जी के बताए गये सत्य के मार्ग के अनुकूल है। प्रो0 शान्ति कुमार, सुखदा, स्वामी आत्मानन्द आदि सत्य के बल को आधार बना कर अपने आन्दोलन को आगे बढ़ाते हैं। सत्य के बल पर ही वे मन्दिर में प्रवेशाधिकार का आग्रह करते हैं। 'रंगभूमि' में भी प्रेमचन्द ने गाँधी जी के सत्यप्रियता के सिद्धान्त का पालन किया है। 'रंगभूमि' का नायक सूरदास सत्य पर चल कर ही अपना जीवन पूरा करता है। वह अपने जीवन की अन्तिम साँसें गिन रहा है और उसका सबसे बड़ा शत्रु ज्ञानसेवक सामने खड़ा है। वह सत्य केबल पर उसका सामना करता है और कहता है– ''मैं हकिमों को दिखा देता कि एक दीन अंधा आदमी एक फौज को कैसे पीछे हटा देता है, तोप का मुँह कैसे बन्द कर देता है, तलवार की धार कैसे मोड़ देता है। मै धर्म के बल पर लड़ना चाहता था।''[5]

'अहिंसा' गाँधीवाद का अन्य प्रमुख सिद्धान्त है। कुछ विद्धान गाँधी जी के अहिंसा को प्रायः हिंसा के अभाव के रूप मे स्वीकार करते हैं, किन्तु अहिंसा एक भावात्मक प्रक्रिया एवं शक्ति है, जो मानव को राग, द्वेष, ईर्ष्या और स्वार्थ आदि से रहित प्रेम करना सिखाती है। गाँधी जी की विचारधारा में अहिंसा और प्रेम को मूलतः पर्याय ही माना गया है। 'कर्मभूमि' शीर्षक उपन्यास में प्रेमचन्द ने अहिंसा को अत्याधिक महत्व देते हुए उसका पूर्णतः पालन किया है। प्रो0 शान्ति कुमार तथा अमरकांत शान्ति और अहिंसा के पक्षधर है। सलीम जब अमरकांत को गिरफ्तार करने आता

है, तो मुन्नी के उत्तेजित करने पर भीड़ सलीम की मोटर घेर लेती है। अमरकांत हिंसा का विरोध करते हुए भीड़ को समझाता है ''क्या करते हो ? पीछे हट जाओं। अगर मेरे इतने दिनों की सेवा और शिक्षा का यही फल है तो मैं कहूँगा कि मेरा सारा परिश्रम धूल में मिल गया। यह हमारा कर्मयुद्ध है और हमारी जीत हमारे बलिदान और हमारे सत्य पर है।''[6]

इसी प्रकार गाँधीजी के अन्य सिद्धान्त सत्याग्रह, सविनय–अवज्ञा, हृदय–परिवर्तन इत्यादि सभी का सहारा प्रेमचन्द ने अपने अलग–अलग उपन्यासों में अलग–अलग तरीके से लिया है। गाँधी और प्रेमचन्द को एक बात जो समान धरातल पर ला खड़ा करती है – वह उनका मानवतावाद। जब लक्ष्य एक हो तो रास्ते कितने भी अलग क्यों न तो, पर मंजिल पर पहुँच कर मिलना ही होता है। यही बात प्रेमचन्द और गाँधी जी के सन्दर्भ में सटीक साबित होती है।

'गोदान' उपन्यास तक पहुँचते–पहुँचते प्रेमचन्द का आदर्शवाद और गाँधी जीवन दर्शन दोनो का उत्साह ठण्डा पड़ चुका था। गाँधीवाद पर टिके उनके आदर्शवाद पर अब दरारें पड़ने लगी थी। उनमें पाप और पुण्य सत्य– असत्य के सनातन संघर्ष में पुण्य एवं सत्य की अन्तिम विजय के प्रति आस्था हिलने लगी थी। उन्होने 'गोदान' से पूर्व उपन्यासों में प्रेमशंकर, मायाशंकर, सूरदास, अमरकांत, प्रो0 शांतिकुमार चक्रधर और जोहरा आदि अनेक पात्रों में गाँधीवादी विचारधारा के अनुकूल बुराई को त्यागकर अच्छाई अपनाने और बुराई के प्रत्युतर में अच्छाई करने का आदर्श दिखाया है। किन्तु गोदान तक आते–आते उन्होने आदर्शवाद त्याग कर यथार्थवाद को अपना लिया था। उनका कथन है कि ''भेड़ियों ने सदा निरीह भेड़ों को पंजों से ही उतार दिया है। सीधे आदर्शवाद का सहारा न लेते हुए भी गाँधीवादी मानवतावाद उनके साथ अन्तिम छोर तक रहता है, जो सदैव मानव के सुखी समाज की आशा का दीप जलाये रखता है।

1. अपनी जमीन (पत्रिका) अप्रैल – सितम्बर – 2005 (लेख–ले0 मौहम्मद अरशाद खान)
2. राष्ट्रीय कार्यो में गुलामी, प्रेमचन्द
3. गाँधी और गाँधीवाद (प्रथम भाग), पृ0 28
4. प्रेमचन्द : चिन्तन और कला, डॉ0 इन्द्रनाथ मदान पृ0 5
5. रंगभूमि, प्रेमचन्द पृ0 सं0 226
6. कर्मभूमि – प्रेमचन्द